

साधु भाई मन रो केणो मत कीजे देसी भजन वार्ता लिरिक्स



साधु भाई मन रो,
केणो मत कीजे ।

दोहा – बन्धुव धिक जन्म,
कही कुळ काम नहीं आवे,
पुत्र धिक जन्म,
मात पिता दुःख पावे ।
नारी धिक जन्म,
पीव न लागे प्यारी,
राजा धिक जन्म,
नगरी रेवे दुखारी ।
कवि धिक जन्म,
बैठ सभा न रिझावै,
दातार धिक जन्म,
मंगत घर खाली जावे ।
सात जन्म धिक कहिये,
खोटी माया नहीं माणिये,
बेताल कहे विक्रम सुणो,
धिक वो राम न जाणिये ।

मन थू म्हारी मान ले,
बार बार कहू तोय,
हरि भजन बिना तेरो,
निस्तारो नहीं होय ।
निस्तारो नहीं होय,
गड़ीन्दा खातों जावे,
भवसागर में सतगुरु बिना,
कौन पार लगावे ।
प्रताप राम सन्त कहत हैं,
घट में लीजे जोय,
मन थू म्हारी मान ले,
बार बार कहू तोय ।

मैं जाणियो मन मर गया,
बळ जळ हुआ भभूत,
मन कुत्ता आगे खड़ा,
ज्यूँ जंगल में भूत ।
मन के हारे हार हैं,
मन के जीते जीत,
मन ले जावे बैकुंठ में,
मन करावे फजीत ।



साधु भाई मन रो,
केणो मत कीजे,
दव में काठ कितो ही घालो,
अग्नि नहीं पतीजे,
साधु भाई मन रो,
केणो मत कीजे। **bd।**

मन ही महा अनीति कहिये,
बड़ा बड़ा भूप ठगिजे,
जोधा जबर हार गया इण सू,
पड़िया कैद में पसीजे,
साधु भाई मन रो,
केणो मत कीजे। **bd।**

इण मन में एक निज मन कहिजे,
उण रो संग करीजे,
ऋषि मुनि इण अंतर्मन से,
सायब रे संग भींजे,
साधु भाई मन रो,
केणो मत कीजे। **bd।**

मन को मोड़ करे कोई सुगरो,
जद थारो मनवो धीजे,
इड़ा पिंगला बोले जुगत से,
सुखमन रो घर लीजे,
साधु भाई मन रो,
केणो मत कीजे। **bd।**

जीव पीव री दूरी मेटो,
जद थारो मनवो धीजे,
मदन केवे आ मन री मस्ती,
भले भाग भेटीजे,
साधु भाई मन रो,
केणो मत कीजे। **bd।**



साधु भाई मन रो,
केणो मत कीजे,
दव में काठ कितो ही घालो,
अग्नि नहीं पतीजे,
साधु भाई मन रो,
केणो मत कीजे। **bd।**

गायक – श्याम जी वैष्णव ।
प्रेषक – रामेश्वर लाल पँवार ।
आकाशवाणी सिंगर ।
9785126052